3.

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-80-3

दाम : ₹49/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 3

Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं ‘पंचदेव’ राखल गेल अछि। ‘पंचदेव’क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार’, ‘वैदेह सम्मान’, तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर ‘श्रीनिवास’, श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

उरीन

अदराक अमैया भार साँठिते जहिना बुधना कक्काक मन हल्लुक भेलैन तहिना सुधनियोँ काकीकेँ भेलैन। पैछला अखाढ़मे बेटीक बिआह भेने अमैया अन्तिम भार छी, जे पूरि दुनू परानी बुधना कक्काक मन हल्लुक भेलैन। हल्लुक होइते चैनिक नमहर साँस छोड़लैन। नमहर साँस ई जे बेटी बिआहक भार-दौरक प्रकरणक आखिरी वीध-बेवहार छी। ओना, भार-दौरक वीध-बेवहारक चलैन बेठेकान अछि, से दुनू परिवारक, माने बरो पक्षक आ कनियोँ पक्षक मुदा एते तँ ठेकनाएल ऐछे जे कोन पाबैन आकि समैयक भार कोन पक्षसँ आएत-जाएत। जहिना पवनौट तहिना समैया, जे दुनू पक्षसँ सालो भरि चलिते अछि।

भार-दौर बेठेकान एना अछि जे जइ मासमे बिआहक वीध-बेवहार पूर होइए तेकर पछाइतसँ भार-दौरक वीध-बेवहार शुरू होइए। ओना, कुमार-भारक चलैन सेहो अछि जे बिआहसँ पहिने होइए...।

..जहिना माता-पिताक मृत्युक सराधक पछाइत मासे-मास तीर्थानुकूल छाया होइत बरखी लग पहुँच बिसरजन करैए, तहिना बेटो-बेटीक बिआहक पछाइत सालक आखिरी मास, माने जइ मासक लग्नमे बिआह भेल रहल तइ मासमे पहुँच बिआहक प्रकरण पूर होइए। तँए जहिना बरखी भेला पछाइत ऐगला बरखीक प्रकरण शुरू होइए तहिना

साल बीतला पछाइत दुरागमनक प्रक्रिया शुरू होइए।

मृत्युक पछाइत जहिना छायो बेठेकान अछि जे कोन माससँ शुरू हएत। तहिना बिआही भारोक अछि। बेठेकान ई जे जेना अगहनमे मृत्यु भेने पूससँ छाया शुरू होइए तहिना जेठमे बिआह भेने अमैया भारसँ शुरू होइए।

बुधना काका अपन तेसर बेटी, माने अन्तिम बेटीक बिआह पैछला अखाढ़मे केने छला, जइसँ भार पछुआ गेलैन, सएह पाँचटा भार समधियौर, जमाए ऐठाम पठा दुनू परानी- बुधना काका आ सुधनी काकी- नमहर साँस छोड़लैन। बेटीक रीनसँ अपनाकेँ उरीन पबिते मने-मन दुनूकेँ खुशी उपकलैन। खुशियो उपकब सोभाविके छेलैन। सोभाविक ई जे जहिना माथपर भरिगर बोझ रहने देहक सभ अंग भार तर दबल रहैए मुदा निच्चाँ रखिते देहक संग अंगो भार मुक्त भऽ जाइए तहिना दुनू बेकती बुधनो काकाकेँ भेलैन। सालक भार-दौरक हिसाब जोड़ैत सुधनी काकी बजली–

“जेना अपन पहिल भार पुरलौं तेना ओ कहाँ पुरा सकला।”

‘बर-पक्षक पहिल भार दब पड़लैन..!’ पत्नीक बात बुधना काका कानसँ तँ नीक जकाँ सुनलैन मुदा मनकेँ अनसुन बनबैत बजला–

“जखन दुनू परिवार एक सीमापर सम्बन्ध स्थापित केलौं, तखन एहेन चर्च नीक नहि।”

पतिक बात सुनि सुधनी काकीक मनमे कचोट भेलैन। कचोट ई जे जखन दुनू परिवारक सम्बन्ध बनल तखन जँ सभ वीध-बेवहारपर नजैर खिड़ा मिलानी नइ करैत चलब तखन एकरसता दुनू परिवारमे केना औत। ई बात जरूर जे दू परिवारक बीच उच्च कोटिक सम्बन्ध स्थापित भेल, तँए छोट-छीन काजो आ बातोपर धियान ओही नजैरे (साधारण बुझि) देबा चाही, मुदा ओही छोट-छीन काज-विचारमे तँ पैघो-पैघो

मान-समानक बीआ तँ नुकाएल ऐछे...।

..मुदा मनक कचोट सुधनी काकीकेँ लगले टघैर गेलैन। टघैरते मन घुमलैन। घुमिते बजली–

“आरो जे भेल से भेल मुदा सात गंगा नहेला साफल तँ भइये गेल।”

पत्नीक मुँहक बहैत गंगा-धारमे जँ बुधना काका नइ भरि देह तँ चिड़ैयो जकाँ एको लोल जँ लूझि नै लेता सेहो केहेन हेतैन। बजला–

“किछु छी तँ अपन गाम अपन गाम छी। कोनो कि टोल-टपराक बास अछि। पाँचटा अमैया भार जोड़ब, ओ थोड़े बुझत जेकरा गाममे बेसी तारे-खजूरक गाछ छइ।”

धारक ऐगला रेतमे पतिकेँ बहैत देख धोतीक पैछला खूट–ऐ दुआरे जे धारमे खढ़ो जखन मददगार होइ छै, तखन पतिक धोतीक खूट तँ सहजे पुरुखक खूट छी– पकैड़ दुनू पएर पाछूसँ पटकैत बजली–

“पाँचो भारक पाँचो रंगक आम पाँच गामक रहितो एके गामक ने भेल। मुदा तैयो अपन गुण-धर्म तँ अछिए।”

‘गुण-धर्म’ सुनि बुधना काका चौंकला। चौंकला ई जे गुण-धर्म तँ मनुखमे होइ छै, आमक नाओं किए कहली? मुदा पति रहैत ईहो कहब नीक हएत जे हमरा नइ बुझल अछि, से कनी फरिछा कऽ बुझा दिअ। मनमे अतस्-वितस् उठलैन। मुदा लगले मन फरीच भऽ गेलैन।

बजला–

“जहिना-जहिना ऐगला-पैछला भरियाक संग आमक भार सँठने छेलौं तहिना-तहिना ने आमो छेलइ।”

पतिक सह पबिते सुधनी काकी बजली–

“फैजली आमक भारमे की केने छेलिऐ से अहाँ बुझलिऐ?”

पत्नीक बात सुनि बुधना कक्काक मन कहलकैन, जँ प्रश्नक उत्तरमे देरी लगाएब तँ ओ सोचल-विचारल भेल, तइमे जँ चुकब तँ गाछक बानर जकाँ डारिक चुकब हएत, आ जँ धड़फड़मे बाजव तँ ओ भेल उतरा-चौड़ी। तहूमे दुनू परानी छी, पत्नी-पति छी जँ उतरा-चोड़ी नइ करैत चलब तँ परिवारक गाड़ी गुड़कबे ठमैक जाएत। मुदा देरी देख सुधनीए काकी बजली–

"फैजली आमक भारक तऽरमे, पेनीमे सापसीन आम पसारि देने छेलऐ!"

'सापसीन आम' सुनि बुधना कक्काक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे बम्बइ, कलकतिया, सपेताक चर्च करबे ने केलैन आ सापसीनक गप किए चालि देलैन। फेर मनमे भेलैन जे जँ अपना नीक लगल एकर माने ईहो तँ नहियेँ हएत जे पत्नियोँकेँ नीक नइ लगैन...।

..भेल तँ जे सा-पसीन कहलैन, से जँ सपसिन कहितैथ तँ बुझितौं जे अपन पसीनक विचार कहलैन। सेहो 'स' नै 'सा' कहि देलैन! ओना, अमैया समए छी आमक लग्न भेल, ऐमे जँ कथा-कुटुमैती जकाँ कूट भाषाक प्रयोग करब तँ ओ अनुचित हएत। तँए सापसीन आम भेल, जे सजमनियेँ आम जकाँ कहियौ आकि फैजलीसँ डेढ़िया-दोबर नमहर कहियौ, से तँ होइते अछि। मुदा शुरूहेसँ जे आम रोगाए लगैए ओकर अन्तो पीलुए भोगसँ होइ छइ। तखन तँ भेल पील्लू भोग। मुदा छी तँ सापसीने। गृहिणीक गृह विद्यालय तँ ओहन गुरुआश्रम होइत जैठाम सिसैकतो आ सिहैकतो पति ज्ञान ग्रहण करैत। पतिक रूपमे बुधना काका बजला–

"सापसीन आम तँ पीलुआहा आम छी, फैजली आमक तरमे किए घोंसिया देलिऐ?"

पतिक गिरगिराइत, मिरमिरइत बात सुधनी काकीक मनकेँ जेना

धक्का मारलकैन। जहिना दारीम, कटहर, नेबो, शरीफा पकि कऽ फटैत-फटैत, अवाज करैत फटि जाइए तहिना फटकैत सुधनी काकी बजली–

“अहाँ बुझै छिऐ जे जमैया भार छी, मुदा हम तँ समधिनियाँ भार बुझै छी, तँए रंगक संग रभस नइ होइ तखन भारे की भेल?”

पत्नीक विचारकेँ बहटारैत बुधना काका बजला–

“सालक लग्नक आखिरी मासो छी आ आखिरी भारो छी। पार लगि गेल।”

‘पार लगि गेल’ बजैक क्रममे तँ बुधना काका बाजि गेला मुदा जेना अपने मन अपना बोलकेँ रोकि देलकैन। रोकि ई देलकैन जे गाम-समाजमे बिआहक जे मान-दण्ड समाजमे चलैत अछि- जे दस वर्षे भवेत कन्या, जँ तइ हिसाबे सही समयपर बेटा-बेटीक बिआह नइ भेल तँ अनेको प्रश्न समाजक बीच उठऽ लगैए। मुदा नइ होइक पाछू की कारण अछि, तइबेरमे गाम-समाज चुप भऽ जाइए..!

..एक दिस प्रश्न अछि बेटीकेँ पढ़ा-लिखा डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर इत्यादि बनाउ, दोसर दिस पनरह-सोलह बर्खक बेटी होइते, रंग-रंगक टीका-टिपणी समाजमे उठऽ लगैए। दुनूक विपरीत परिस्थिति छै, प्रोफेसर वा डॉक्टर बनैमे बीस-पचीस बर्खक उमर भइये जाइए। दुनूक बीच सामंजस केना हएत..?

मुदा से हेबो केना करत, एक दिस समाजक अधिकार बुझि लोक बाजव उचित बुझैए मुदा जैठाम काजक प्रश्न अछि तैठाम पीठ देखा पाछू ससैर जाइए..! मुदा लगले बुधना कक्काक मन फरीच भऽ गेलैन। समाजसँ परिवार दिस बढ़ला। बढ़िते मनमे उठलैन, एना बेटी माए-बापकेँ भार किए बनल अछि? ओना, पहिलुको दुनू बेटीक बिआहमे तवाही भेले रहए मुदा तेसरमे तँ नाको-दम भऽ गेलौं। असे ने छल जे बेटीक बिआह कऽ सकब। मुदा फेर मन घुमलैन। घुमिते बिआहक

खर्चपर नजैर गेलैन। तीन लाख रूपैआक काज भेल..!

बिआहक चौदहम मासमे बैंकक लोनक तगेदाक सूचना बुधना काकाकेँ भेटलैन। जे एजेण्ट गाइक खटालक नाओंपर बैंकसँ लोन दिया देने रहैन सएह पत्रक सूचना बुधना काकाकेँ देलकैन। बिआहक खुशी बुधना कक्काक मनसँ मेटाएलो ने रहैन, दोसर साल बीतते तेसर साल दुरागमन करता, तैबीचक सभ वीध-बेवहार निमाहि बेटी-दुरागनक हीक लगले छैन जे हँसी-खुशीसँ बेटी माए-बापक परिवार छोड़ि सृष्टिक सृजनमे एक नव परिवार बनि जीवनक धारमे बहैत झिलहोरि खेलाइत चलैत रहत।

बैंकक नोटिस नेने बुधना काका पहुँचला। बेरुका समए। एके-दुइए बेरुका चाह केते गोटे पीबियो नेने आ केते गोटे पछुआएलो रहैथ। हमहूँ पछुआएले रही। ओना, बुधना कक्काक घर बेसी हटलो नहियेँ छैन, मुदा बेरुका रौदमे आएल रहैथ, उनटा रस्ता तँए सिरचढ़ रौद। जइसँ चेहरामे मलीनता आबिये गेल रहैन। देखते कहलयैन–

“काका, गोड़ लगै छी, एते रौदमे किए..?”

कहि कुरसी आगू दिस बढ़ा, बाँहि पकैड़ बैसौलयैन। थाकल-ठेहियाएल चेहरा देख कहलयैन–

“काका, चाह पीबैक समए अछि। बनि रहल अछि। तैबीच पानियोँ पीब?”

‘चाह-पानि’ सुनि बुधना कक्काक मन सिहरलैन। बजला–

“तोहूँ बैसह ने, घरवारी सब चाह-पानि पीऔत कि तोहीं पीयेबह। किछु काजे एलौं हेन।”

बदलैत मुहोँ आ बोलोक सुर्खी देख मनमे भरोस भेल। मनमे ई हुअए जे भरिसक कोनो उकड़ू काजमे काका फँसि गेल छैथ तँए जालमे

फँसल चिड़ै जकाँ फड़फड़ा रहल छैथ। दोसर दिस जखन मन बहटतैन तखन अनेरे पैछला सोग-पीड़ा कमतैन। कहलयैन–

“काका, साठि बर्ख तँ पार कऽ गेल हेबै किने?”

हमर बात सुनि बुधना कक्काक मनमे जेना अकासक अस्सी मन बरखा बरिस गेल होन्हि तहिना विहुँसैत बजला–

“निरमल, तोरासँ लाथ की, जिनगीमे कहियो डायरी नइ लिखलौं। डाइरियेक कोन बात जे पढ़ै-लिखैक लाटे टुटि गेल। मुदा गामक तँ नीक परिवारमे माने दस-पनरह बीगहाबला किसानमे सब दिन हिसाब रहल। कहियो ने कोनो तेहेन भार पड़ल आ ने बुझि पेलौं।”

बुधना कक्काक दौड़ैत मन जेना परिवारमे सोन्हि खुनए विदा भेल होन्हि, तहिना बुझि पड़ल। तैबीच माए चाह नेने पहुँचलि। उठि कऽ डिसमे सँ चाह उठा हाथमे दैत कहलयैन–

“चाह नइ पीआबै छी, चाहक भाँज पुरबै छी।”

जेना बुधना काकाकेँ नीक लगलैन, बजला–

“चाह की भेल आ भाँज की भेल।”

कक्काक बात सुनि मन मानि गेल जे बुधना काका सोलहन्नी बाटीक पानि जकाँ थीर भऽ गेला। कहलयैन–

“काका, एक गिलास चाहक दूधमे दू गिलास चाह बनल, तँए कहलौं चाह नइ चाहक भाँज पुरेलौं।”

मधुशालामे जँ सबाल-जवाब नइ होइत चलत तँ ओ मधुशले की? केते कण्ठ फाड़ि-फाड़ि मधुमाछी सभ मधु बनबैए आ...।

..मनमे अपन विचार चलिते रहए कि बुधना काका बजला–

“ई तँ भेल फुसियाही वौस। असल चाह तँ जिनगीक चाह छी।”

कहि चुप्प भऽ गेला। चेहरासँ बुझि पड़ल काजक चिन्ता किछु

बेसी छैन, तँए धड़फड़ी जकाँ छैन।

कक्काक डमहाएल बोली सुनि कहलयैन–

"गपमे एते धड़फड़ाएब तँ गप चलत। असथिरसँ पहिने चाह पीबू, पान खाएब तखन आगूक गप हेतइ।"

बुधना कक्काक उधियाइत मन तैयो उधिया जाए। चाह सधलो ने छेलैन कि बिच्चेमे उधैक बजला–

"बौआ निरमल, यएह चाह छी जे लगले पहिने पीने रहैए ओकरा-ले किछु ने भेल, अपनो मन यएह कहतै जे गदे-पर-गद उचित नहि। मुदा थाकल-ठेहियाएलक बीच आकि जाड़-ठाड़मे पड़लाहक बीच अमृतो तँ बनियेँ जाइए।"

चाह सधल, पान खेलौं। मुँहमे पान जाइते जहाँ मुँह उठा बुधना कक्काक मुँहपर देलिऐन कि हुनकर नजैर अपन काजपर अँटकल बुझि पड़ल। जेबीसँ लोन-आपसीक किस्तक कागत देखए देलैन। कागतकेँ देख टेबुलपर रखि कहलयैन–

"काका, अहाँक कन्यादान सभसँ नीक ऐ साल गाममे भेल।"

'सभसँ नीक भेल' सुनि बुधना कक्काक मन मौलाए लगलैन। जिनगीमे चारू भागसँ जेना अपनाकेँ घेराएल बुझि पड़लैन। एक दिस अछैते कमासुत परिवार रहितौ रंग-रंगक बाधा परिवारमे उपस्थिति भऽ गेल अछि। बेटीक बिआह कऽ अपनाकेँ बेटीक रीनसँ उरीन भेलौं, मुदा बिआहक मोटाक भार तँ ऊपरमे अछिए। दुनू बेटा अपनामे अराड़ि ठाढ़ कऽ आरो फसाद परिवारमे लादि देने अछि। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बुधना काका बजला–

"अपना केने थोड़े भेल, समाजक केने ने भेल। चारू दिससँ सोंगर लगा, सोंगरेपर घर ठाढ़ कऽ देलक, पछाइत... ।"

पुछलयैन–

“काका, कर्ज किए लेलौं?”

कर्ज किए लेलौं! एकरा सभ अधला बुझैए। मुदा परिस्थितिक सामना लेल कर्जक खगता लोककेँ भइये जाइ छइ। सामंजस करैत बुधना काका बजला–

“बौआ, करजे ने रीन छी। मुदा जहिना माए-बापक श्राद्ध-क्रिया तक पार लगा बेटा उरीन होइए तहिना ने बेटियो बिआह रीन छी, ओकरा केला पछातिये ने ओइ रीनसँ उरीन हएब। कोनो कि खाइ-पीबैले लोन लेलौं।”

बुधना कक्काक दु-दिसिया प्रश्नक बीच भोथिया गेलौं। भोथिया ई गेलौं जे परिवारमे ओहन बहुतो रीन अछि, जेकरा चुकताएब कर्तव्यक सीमामे अछि। पाशा बदलैत पुछलयैन–

“काका, दुनू भाँइकेँ नोकरीमे बचत नै छैन जे बहीनक बिआह निमाहितैथ।”

हमर बात जेना काकाकेँ नीक लगलैन। बेटाक बेवहारसँ मन एते खिन्न भेल छेलैन जे बेकाबू भऽ गेला, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला–

“की बाजू बौआ, नइ बाजू तैयो गेलौं! बाजू तैयो गेलौं! हाथक कोनो ओंगरी कटने घा अपने हएत!”

टोकारा देलिऐन–

“से की काका!”

बुधन काका बजला–

“बौआ, तेसर बेटीक बिआह, अन्तिम कन्याँदान छल। पहिल कन्याँदानमे समए एते नइ कुदल छल तँए बेसी भारी नहियेँ भेल। दोसर कन्याँदानमे दुनू भाँइ, माने दुनू बेटा अपन बहिन बुझि सब काज केलक। नीक खर्चो भेल आ कुटुमैतियो नीक भेल। मुदा..!”

‘मुदा’ कहि कक्काक बोल रूकि गेलैन। जेना कियो पाछूसँ पकैड़ पाछूए दिस खिंचए लगलैन तहिना। एकाएक बीचमे बोली बन्न होइते मनमे शंका भेल जे किए बिच्चेमे काका रूकि गेला। मुदा रूकैयोक केते कारण होइ छै, जँ किछु बीचक बात बिसैर गेलौं...। चाहे जँ कोनो एहेन बात सोझमे आबि जाए, जइसँ विचारेमे टकराहट आबि गेल...। एहनो भऽ सकैए जे बिच्चेमे पानि पीबैक इच्छा जगि गेल, कण्ठे सुखए लगल...। एहनो भऽ सकैए जे मुँहमे किछु पड़िए गेल...। अनेको कारण अछिए। तँए कनी अपनो बजैसँ परहेज केलौं।

जहिना उफनाएल पानि धरियाइत-धरियाइत असथिर होइत-होइत शान्त भऽ फरीच हुअ लगैए तहिना बुधना कक्काक मन सेहो फरीच भेलैन। फरीच होइते बजला–

“बौआ निरमल, बड़का तीन-तसियामे परिवार फँसि गेल अछि।”

‘परिवार’ सुनि मन ठमकल। ठमकल ई जे कियो अपने कुचालि चलने फँसि जाइए, जेकरा सुचालि बनबैमे केतौ-केतौ विचारकेँ तोड़ए पड़ै छै आ केतौ-केतौ बदलैयो पड़ै छइ। अपने अही घुरछीमे घुरियाएल रही, कि बिच्चेमे बुधना काका बजला–

“बौआ निरमल, दुनियाँमे कियो केकरो ने!”

कक्काक दार्शनिक बात सुनि अपनो मन जागल। पुछलयैन–

“से की काका?”

जेना कियो ठोहि फाड़ि कनबो करैए आ बजबो करैए तहिना बुधना काका ठोहि फाँड़ि बजला–

“बौआ! बेटी हमर छी, मुदा बहिन तँ ओही दुनू भाँइक छिऐ! जे बहिन अपन बपौती सम्पैत हँसी-खुशीसँ भाए-भौजाइले छोड़ि जाइए..! आ ओही बहिनक बिआहमे अपन मुड़ी छिपैत भाए, हँसी-खुशी घरसँ बहिनकेँ विदा नै कऽ भगबैक भाँज लगा दइए!”

एक संग बुधना काका केते बाजि गेला। जँ सभ बातकेँ पकैड़ आगू बढ़ब तँ सम्भव अछि जे काजेक गप पछुआ जाए वा छुटि जाए आ अकाजेमे समए चलि जाए। तँए प्रश्नक जड़िकेँ पकैड़ पुछलयैन–

“काका, एना सोझरा कऽ कहू जे छोटकी बेटीक बिआहमे दुनू बेटामे सँ कियो मदैत नहि केलैन?”

‘मदैत’ सुनि जेना बुधना कक्काक दुनू बेटा परहक तम-तमी आरो चढ़ि गेलैन। बजला–

“पाँच भाए-बहिनमे जँ एक रंग-के जमीनक हिस्सा बाँटि दिअए तँ दस बीघामे चारि बीघा दुनू भाँइकेँ हेतइ। बाँकी छह बीघा तँ ओही तीनू बहिनक होइतै जे छोड़ि ओ सभ सवुर केने अछि, मुदा भाए सबहक एहने किरदानी होइ जे अपन रूपैआ बैंकमे रखने अछि आ अपने बैंकक लोनसँ बेटीक बिआह केलौं।”

बुधना कक्काक भँसैत विचार देख, मोड़ैत पुछलयैन–

“काका, छोटकी बहिनक बिआहमे दुनू भाँइमे सँ कियो ने आएल? आ ने किछु उचितो-उपकार केलक?”

अपन हारल जहिना बजैए तहिना काका बजला–

“नहि।”

कक्काक बात सुनि मनमे भेल जे एहेन तँ ने भेल छैन जे दुनू बेटा एक विचार बना हिनके ने तँ धकिया देने छैन। मुदा से बूझब केना। पुछलयैन–

“काका, एना किए दुनू भाँइ एकमुहरी मुँह घुमा लेलैन?”

‘एकमुहरी’ सुनिते जेना दुनू बेटा-बीचक बुधना कक्काक मनमे पन्ना उनटलैन। निधोख बजला–

“बौआ, दुनू एकमुहरी कहाँ अछि, दू-मुहरी अछि आ दुइए-मुहरी

की कहबै, बहुमुहरी अछि!”

एक-मुहरी, दू-मुहरी आ बहु-मुहरीक बीच ओझरा गेलौं। पुछलयैन–

“एना नइ बुझब, कनी सोझ-साझ करि कऽ बजियौ, तखन बुझब।”

हमर बात बुधना काकाकेँ नीक लगलैन। बजला–

“दुनू भाँइमे भैंसा-भैंसीक भिरंत भीतरे-भीतर भीतरघात केने छइ। जेकर फल हमरेटा किए परिवारोकेँ भोगए पड़ि रहल छइ।”

पुछलयैन– “से की?”

बजला–

“जड़िएसँ कहै छिअ। मैझली बेटीक बिआहमे दुनू भाँइ, बहिनक बिआह बुझि जी-जानसँ यज्ञ सम्हारलक। जे करीब दस बर्ख भऽ गेल हएत। दुनू भैंयाँ आ दुनू दियादिनियाँमे खूब मेल-मिलान रहइ। मुदा..!”

‘मुदा’ कहि फेर बुधना काका रूकि गेला, जेना हरक नाश कोनो बुट्टीमे लगि गेलापर बरद ठाढ़ भऽ जाइए तहिना बोलती बन्न कऽ लेलैन। हरवाह जहिना बरदक नाङ्गरि पकैड़ बोली दइए तहिना बोली देलिऐन–

“काका, अहूँ केकर दिनक पइर करै छी, पहिरै जोकर धोती जहिना फटऽ लगैए तहिना सुनै जोकर बात जखन मनमे भेल कि चुप्पे भऽ गेलौं।”

हमर बात सुनि काकाकेँ जेना हूबा जगलैन, बजला–

“दुनू भाँइक बीच किए गरमेल अछि आ की भेलै से तँ ओ सभ जानए, मुदा गामक आवा-जाही दुनू बन्न केने अछि। ने कोनो खोज-पुछारि कियो करैए आ ने...।”

कहलयैन–

"तरवन तँ अहाँकेँ आरो नीक भेल किने। मारे खेत-पथार अछि, बेच-बेच खूब खाउ-पीबू। जे मन फुरए, जेना मन फुरए से करू।"

ओना, उत्साहित होइ दुआरे कहलयैन मुदा काजक घुरछीमे काका तेना ओझरा गेल छैथ जे उत्साहे टुटल छैन। बजला–

"बौआ, दुनू भाँइ भैयारीक झगड़ा तेना कपारपर पटैक देने अछि जे कोनो सशे-वश ने चलैए।"

पुछलयैन– "से की?"

बजला–

"दुनू भाँइ कोर्टसँ नोटिस करबा देने अछि जे बिना कोर्टक आदेशे सम्पैतकेँ किछु ने कऽ सकै छी। तँए ने, ने तँ दस कट्ठा खेत बेच कऽ बेटीक बिआह कऽ लइतौं, आ जहिना ओकरा सबहक मुँह-कान घुमल छै तहिना अपनो घुमा लइतौं।"

मुहसँ तँ किछु ने निकलल मुदा मुड़ी डोलबैत कक्काक विचारकेँ सूहकारि लेलिऐन। ओना, कक्को बजैत-बजैत चुप भऽ गेल छला, तैबीच अपनो आगू किछु सुझबे ने करए जे किछु पुछितिऐन। किछु समए दुनू गोरेक बीच गुमा-गुमी रहल। तैबीच माए सेहो दोहरी चाह नेबोबला बनौने आएल। चाह देख बुधना काका बजला–

"नेबो देल चाह तँ चाहे होइ छइ।"

चाहक प्रशंसो आ मनक खुशियो देख पुछलयैन–

"काका, बैंकसँ लोन केना भेटल?"

हमर बात जेना बुधना काकाकेँ नीक नइ लगलैन। बजला–

"से सभ नइ पुछऽ! ई तँ धैनवाद कुमुदेकेँ दिऐ जे वेचारा तीस-चालीस हजार अपन संगसँ खर्चा कऽ तीन लाख रूपैआ गाइक खटालक नाओंसँ लोन दिआ देलक। जइसँ बेटीक बिआह पार लागल।"

ओना, हमर पुछैक मतलब रहए जे बेटी-बिआहक दहेजक नामे तँ बैंकसँ लोन नइ भेटै छै, सुधंग लोक बुधना काका छैथे, तखन केना भेटलैन? मुदा अपन सभ बात झँपैत-तोपैत बुधना काका बजल छला। फेर मनमे भेल, हमरा बूते जे मदैत हेतैन सएह ने करबैन। जमीनक बौण्ड बनले हेतैन, तैपर बेटा सभ सेहो सम्पैतकें न्यायालयक मुँह देखा देलकैन। दू-दिससँ कानूनी पकड़मे काका आबि रहल छैथ। लौनो चुकताएब हुनके छैन, तैसंग अपन ओहन नगदी आमदनी नइ छैन जइसँ नगदीमे चुकौता। बेटा सभ सहजे अतिक्रमण कऽ देने छैन। अतिक्रमण ई जे जाधैर पिता जीबै छथिन ताधैर वंशगत रूपे हुनकर सम्पैत छिऐन। दियादी-बँटवारा आकि भैयारी-बँटवारा तँ आगूक सीढ़ीक भेल। मुदा एकरो तँ नहियेँ नकारल जा सकैए जे जाबे लोक अपने नइ जीबए चाहत आ जीबैक लूरि नइ बना लेत, ताबे दोसराक भरोसे केते दिन जीब सकैए। पुछलयैन–

“काका, अपन मन की कहैए जे केना पार-घाट लगत?”

हमर बात जेना कक्काक छातीक ओइ निरजन निरजल स्थानपर पहुँच बेधि देलकैन जैठामसँ मनमे कछमछी उठलैन। चौबगलीसँ घेराएल बुधना कक्काक मन, ओइ अपराधी जकाँ बुझि पड़ैन जेकरा दर्जनो सिपाही दर्जनो हथियारसँ घेर कऽ पकड़ने रहैए। डोलैत मन टुटैत विचारक संग बुधना काका बजला–

“बौआ, आरो जे भेल से भेल, मुदा जहिना माता-पिताक रीनसँ उरीन भेलौं तहिना धियो-पुताक रीनसँ उरीन भइये गेलौं। तँए बहुत कचोट मनमे नहियेँ अछि, मुदा... ।”

कक्काक मनक खुशीसँ अपनो मनमे खुशी जगल, पुछलयैन–

“मुदा की?”

बजला–

“मुदा यएह जे जेतबो औरदा बँचल अछि तेतबो दिन निचेनसँ केना जीब, तेकर उपाय कहह।”

एक संग केतेको उलझन छैन! तैबीच चैनसँ जीबए जाहै छैथ, समस्या छोट नहियेँ अछि। मुदा छोट हुअए कि नमहर, बिनु समाधाने चैनसँ रहबो तँ कठिन छैन्हे। तँए नीक हएत जे एक-एक समस्याकेँ सोझरा दिऐन। जखने समस्या सोझरा जेतैन तखने जिनगी सोझरा जेतैन, आ जखने जिनगी सोझरा जेतैन तखने निचेनी आबि जेतैन। कहलयैन–

“काका, बैंकक लोनक तगेदाक प्रक्रिया सेशन कोर्ट जकाँ लगले-लगले नइ होइ छै, एते चूक तँ भेबे कएल जे ओ वेपारी लोन छिऐ, जेकर लाभ वेपारे केनिहारकेँ होइ छै, से नइ भेल। मुदा बेटियोक बिआह तँ मान-सम्मान, इज्जत-प्रतिष्ठा बँचा पार लगाएब साधारण नहियेँ अछि। तखन तँ भेल भीख मांगि भीख बाँटब, चाहे देब।”

हमर बातसँ जेना बुधना कक्काक मन फुनगुनेलैन, बजला–

“गाममे देखै छिऐ बैंकक सिपाही अबै छै आ लोककेँ घरसँ पकैड़ लऽ जाइ छै, तेकर डर होइए!”

कहलयैन–

“जहिना बेटा सब तीन-तसिया चालि मारि अहाँकेँ ओझरा देलैन हेन तहिना ओकरो सबहक ऊपरमे भार दिअ पड़त कक्का।”

बिच्चेमे बजला–

“से जँ होइ तँ घीवोसँ चिक्कन।”

बुधना कक्काक चपचपाइत मन देख पुछलयैन–

“काका, आबो कहू जे अपन मन की अछि।”

जेना बुधना कक्काक मनमे विचारले रहैन कि की, तहिना धाँइ-दे बजला–

“बौआ, साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए, तेहेन जँ भऽ जाए तँ सभसँ नीक। किछु छी तँ परिवारे छी किने, केना अपना आँखिए ओइ गाछ जकाँ देखब जे या तँ बँझिया गेल अछि या गराड़-पील्लूसँ जकैड़ गेल अछि या जेकर सुखाएल, ठुठियाएल डारि सभ भऽ गेल छइ।”

बजैत-बजैत जेना बुधना कक्काक मन उमैड़ गेलैन। मुँहक बकार बन्न मुदा धारक पलाड़ी जकाँ परिवारक धार हृदैमे बहऽ लगलैन।

कहलयैन–

“काका, सभ किछ ठीक भऽ जेतइ! खाली मनकेँ चैन कऽ चेन जकाँ रस्ता बना ऐगला डेग उठबए पड़त, तहीसँ सबटा बेचैनी मनसँ पड़ा जाएत।”

विहुँसैत बुधना काका बजला–

“बौआ, जहिना अबैकाल रस्ता चोन्हिआइ छल से आब फरीच बुझि पड़ैए। आब जाइ छी, फेर निचेनमे आगूक गप करब।”

कहलयैन–

“बड़बढ़ियाँ।”

❑ साभार : अपन मन अपन धन

गुणहीन

जेठ मासक पूर्णिमा दिन। किछु दिन पहिने बैरसाइतिक आगूक दशराहा सेहो भऽ गेल। अपन-अपन मनकमना पूर होइ लेल डिहवारक स्थानमे रेमन्त सजल घोड़ा चढ़ा गामक लोक निश्चिन्त सेहो भइये गेल छल।

हथिया नक्षत्रक पछाइत एको बून बरखाक पानि तँ धरतीकेँ नसीब नहि भेल मुदा जाड़क शीतलहरी अपन रूपमे बेइमानी नइ केलक। तँए ध-ध धधकैत धरतीक छाती खेतक दरारि जकाँ फटि-फटि छहोँछीत भइये गेल अछि।

मौसमक रूखि देख जीवानन काका पाँच कट्ठामे सजमैनक खेती सरस्वती पूजासँ तीन दिन पहिने केलैन। ओना, खेती करैक हिसाब जोते-कोर लगसँ शुरू भऽ जाइए मुदा मूलत: किसान खेतीक हिसाबसँ ऊपर उठा जोत-कोरक हिसाबमे रखने छैथ आ खेतमे बीज रोपनसँ खेतीक हिसाब शुरू करै छैथ। अही हिसाबे जीवानन काका सजमैनक बीआ पाँच कट्ठा खेतमे रोपि लेलैन। गाछो नीक जनमलैन। बरखा नइ भेने शीतो-पल्लाक रूप बदैल गेल तँए ओते प्रभावित सजमैनक गाछ नहि भेल माने एकोटा गाछ कोंकरियाएल नहि, सोलहन्नी कलशल फुदकल गाछ भेल। अपन खेतीक पहिल सीढ़ीक काज देख जीवानन काका मने-

मन हिसाब लगबैथ जे ढकिऔल खेत अछि, तैपर समुचित रसायनिक खाद सेहो देल अछि। तेतबे नहि, नीमक गाछक बीआक संग रसायनिक कीटनाशक दबाइ सेहो दइये देने छिऐ। तँए ने जड़िकेँ काटैक आ ने धड़-पातकेँ चाटैक संभावना अछि।

जेना-जेना जाड़क दिन कमैत गेल तेना-तेना सजमैनक गाछमे उर्जा-शक्ति अबैत गेल जइसँ समयानुसार लत्ती सुंघियाइत-मुड़ीयाइत आगू रमकल। महिना नइ बीतल मुदा फूलक कोढ़ीसँ लत्ती कोढ़िया जरूर गेल। साँझ-भोर देखैक संग जीवानन काका घन्टा-दू-घन्टा काजो खेतमे करिते छला।

पचीसम दिन बीत गेल, खेतक संग लत्तियोकेँ पानिक तृष्णा जगिये रहल छल। तैबीच जीवानन कक्काक मनमे उठलैन- बच्चाकेँ जँ समुचित सुपोषित अहार नइ भेटत तँ ओ रोगाह-टटाह हेबे करत।

अपन किसानी जिनगीक पूर्णता अपना जनैत जीवानन काका केनहि छैथ। अपन खेत, अपन पानिक साधनक संग श्रमक लेल अपन शरीरो छैन्हे, तँए जिनगी जीबैक बिसवास मनमे छैन्हे। श्रमे ओहन चीज छी जे लोककेँ तुष्टि प्रदान करैत अछि से जीवानन काकामे छैन्हे।

छबीसम दिन अपन बोरिंगसँ जीवानन काका सजमैनक खेत पटौलैन। एक तँ मौसमक मासुमी दोसर नीराएल धरती, अपना-अपना ओकातिये लत्ती जोर केलक। तैपर नीरेलाक तेसर दिन बेरुपहरमे यूरिया खाद सेहो छीटि देलखिन। तीसम दिन फूलो आ फूलकोढ़ियो तरेगन जकाँ सौंसे खेत भुक-भुक करए लगल। कचे-बचे जहिना बतिया तहिना फूलो सौंसे खेत जगमगा गेल।

आइ पैंतालीसम दिन छी, जीवानन काका खेतसँ एकटा सजमैन काटि घरपर लऽ कऽ एला। अबिते पत्नीकेँ दरबज्जेपर सँ सोर पाड़ि बजला-

"कनी एमहर आउ।"

ओना, पतिक सोरसँ सुदामा काकीक देहक कम्पन्नमे मिसियो भरि तेजी नइ एलैन। नइ अबैक कारण छल जे एहेन सोर पाड़ब की कोनो एकदिना छी, ई तँ सभदिना छिहे। माने भेल हम दरबज्जापर आबि गेलौं। असथिर डेगे सुदामा काकी दरबज्जापर एली तँ पतिक हाथमे पोछल-पाछल, पुष्ट सजमैन देख बजली-

"अहाँ अमृतक स्रष्टा छी!"

पत्नीक आस भरल बिसवासु बात सुनि जीवानन कक्काक मन दहैल गेलैन। बजला-

"नीक चास अछि, एहेन फलसँ खेत भरल अछि!"

पतिक मुँहक 'नीक चास' सुनि सुदामा काकीक मनमे बिसवासक बास भेलैन। बिसवासक बास होइते मन कलैश कऽ बिहसलैन। बिहैसते बजली-

"लक्ष्मी दहिन छैथ..!"

पत्नीक मुहसँ 'लक्ष्मी दहिन छैथ' सुनि जीवानन कक्काक मनमे अपन लक्ष्य-भेदल श्रम उठलैन। उठिते श्रमशील गुणक आभास भेलैन। आभास होइते मन कहलकैन जे एहेन गुण लोकमे एके दिने थोड़े अबैए। तहूमे अपना सन इलाकामे। जइ इलाकामे महिना-दू-महिनामे मौसम करबट बदलैए। हँ, किछु हद तक ओहन इलाकाक लेल मानलो जा सकैए जइमे बारहो मास एकरंगाहे मौसम रहैए। मुदा अपना इलाकामे तँ आँखियो मुइन देखब तँ बुझि पड़त जे एकटा रौदियाह समए भेल, दोसर दहार आ तेसर भेल दुनूक आड़ि मध्यमास; जइमे ने रौदी आ ने दाही होइए। जखने तीन रंगक मौसमसँ किसानकेँ भेँट हेतैन तखने ने बुझए पड़तैन जे रौदिक ताक केहेन हएत आ दहारक ताक केहेन हएत। जैठाम तीन-गुणिया मौसम अछि तैठाम तीन-गुणियासँ नअ-गुणियोँ आ बरह-

गुणियोँ भइये सकैए, तँए एक-गुणिया बुधिसँ थोड़े काज चलत। तहूमे जँ मात्र बाते-विचारक रहैत तँ कनी काल मानलो जा सकैए। मुदा जैठाम विचारकेँ काजमे ढारैक प्रश्न अछि ओ तँ जटिल अछिए। जटिलताक कारण खाली मौसमेटा थोड़े अछि। श्रमक ढंग सेहो अछिए ने। कियो तेजीसँ कोदारि-खुरपी चलबै छैथ तँ कियो मन्द गतिये, तँ कियो मधमन्द गतिये सेहो चलैबते छैथ, तैठाम एक-हरफी बाजब केते धरि उचित हएत...।

बजला-

“हँ, संयोग नीक अछि।”

बजैक क्रममे जीवानन काका बाजि तँ गेला मुदा लगले अपन मन अपना विचारकेँ घेरैत कहलकैन-

“जे काज अछि (माने सजमैनक खेती) तेकर तँ मात्र एक प्रकरण रोपै दिनसँ फड़ै दिन तकक भेल। दोसर प्रकरण भेल फलकेँ सुन्दर बनाएब आ तेसर प्रकरण भेल ओकर बिकरी। दू प्रकरण–फल बनाएब आ बिकरी–तँ अखन आगूमे बाँकीए अछि; तखन जँ ‘नीक संयोग’ मानब सेहो उचित नहियेँ भेल आ जँ ऐगला दुनू प्रकरणमे कुसंजोग भऽ जाए? तखन तँ संजोग-कुसंजोगक बीचक बीच ने मानल जाएत। जँ से नहि हएत तखन तँ एक-दिसिये ने भेल?”

मुदा मन मानि गेलैन जे पति-पत्नीक बीचेक ने बात छी। आन परिवार आकि आन टोल आकि आन गामक बात थोड़े छी जे लोक दुसत। परिवारेक बात छी सदिकाल गप-सप्प होइते अछि। जाबे धरि संजोग नीक रहत ताबे तक बाजब जे संजोग नीक अछि आ जखनसँ कुसंजोगक आगमन हएत तखनसँ नीककेँ अधला दिस खसैक बात बाजब! तइ बिच्चेमे सुदामा काकी टोकि देलकैन-

“भगवानक नीक नजैर पड़लैन।”

पत्नीक बात सुनि जीवानन कक्काक सोझराइत मन फेर ओझरा गेलैन। ओझरेलैन ई जे सभ किछु तँ अपने लूरिये-बुधिये केलौं तरखन पत्नी किए बेइमानीक बात बाजि रहली अछि। मुदा लगले मन मानि गेलैन जे सोल्होअना हमरेटा-ले बेइमानीक बात थोड़े बजली अछि, आधा तँ अपनो हिस्सा ने हेतैन, तँए पचास पाइ तकक बेइमानी सहाज कएल जा सकैए...।

पुछलखिन-

“भगवानक नीक नजैर पड़लैन आकि अपन नीक नजैर पड़ल?”

तैबीच सुदामा काकीक मन सजमैनक पोछल-पाछल रूपमे वौआ गेल छेलैन। वौआ ई गेल छेलैन जे जखन लोक अपन कएल अमृत फल भोजन करत तखने ने ओ राजा भेल। तहूमे लक्ष्मी भण्डारक पहिल फल छी...।

तँए जीवानन कक्काक बात सुदामा काकी नीक जकाँ नइ बुझली। बजली-

“आइ पहिल फल छी तँए तड़ुओ-तरकारी बनाएब आ भुजुओ।”

‘तड़ुआ-भुजुआ’ सुनि जीवानन कक्काक मनक विचार सेहो निच्चाँ उतरलैन। उतैरते बजला-

“कमा कऽ हाथमे देलौं, आब अहाँ मालिक छी जे जेना बनाबी, तइले अनेरे पहिले किए जी भरछबै छी।”

‘जी भरछब’ सुनि सुदामा काकी बुझि गेली जे नीक मनक इच्छा छैन। मुदा एहेन इच्छा पुरबैले तँ ओहने ने कलाकारियो चाही। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे सजमैन सन सुकुमार तरकारी दोसर कोन अछि जे कमसँ कम संगीक संग चलैए। मात्र नून आ मिरचाइक संग चलैबला छी, जे आन थोड़े अछि। आनो की एके रंगक अछि, रंग-रंगक अछि। किछु एहेन अछि जेकरा भरि देह मसाला चाही तँ

किछु एहेन अछि जेकरा पेटे भरि मसल्ला चाही आ किछु एहनो तँ अछिए जे मसल्लेमे डुमल रहैए।

आइ जेठक पूर्णिमा छी। बैशाख-जेठक धुमसाही लगन चलल अछि, जइमे धुमसाही भोजो-भात तँ हेबे करत। जखने धुमसाही भोज-भात हएत तखने ने तीमन-तरकारीक खगता सेहो बेसी हएत। जखने तीमन-तरकारीक बेसी खगता हएत तखने ने ओकर मांग सेहो बढ़त। जखने कोनो वस्तुक मांग बेसी हएत तखने ओइ वस्तुमे महगाइ सेहो औत। जखने महगाइ औत तखने ने पैदाइसकेँ लाभक पैदाइस भेल!

आठ बजे भिनसरे जीवानन काका चाह पीब खेत गेला। खेतमे सजमैन देख समोह लगि गेलैन। समोह ई लगलैन जे एहेन अनुकूल समए रहितो उपज नष्ट भऽ रहल अछि! खेतक पचीसो प्रतिशत सजमैनक बिकरी नइ भेल! खेतमे पथार लागल सजमैन जुआ-जुआ बुड़हा जकाँ गेल छल। जइसँ लत्तीक बढ़बारि सेहो ठमैक गेल आ लत्तीमे फड़ रहने फड़ब सेहो कमि गेल...।

आड़िपर बैस जीवानन काका विचारए लगला जे एना किए भेल। सजमैन सन सुपरिचित वस्तु, जेकरा दुनियाँ जनैए जे ओ सुपाचक संग सगुणकारी सेहो अछि। घर-घरमे उपयोग होइते अछि। तेकर एहेन दिन केना भेल जे सभटा खेतेमे पड़ल जुआ कऽ नष्ट भऽ गेल?

जीवानन काकाकेँ अपन काजक प्रति मनमे शंका भेलैन। शंका दू रंगक भेलैन। पहिल फलक–माने सजमैनक–आ दोसर भेलैन लोकक मांगक प्रति। सजमैन खाइक वस्तु छी, घर-घरक लोक खाइते छैथ तँए मांगक जे बजार अछि ओ समटल नहि, पसरल अछि...। तँए मांगक प्रति विचार जीवानन कक्काक मनमे पछुआ गेलैन आ फलक विचार अगुआ गेलैन। फलक विचार अगुआइक कारण ईहो भेलैन जे वस्तु चाहे ऐ जुगक हुअ आकि ओइ जुगक मुदा प्रतियोगिता हएत वस्तुएक बीच

ने। तँए मनमे प्रवल आशंका भेलैन जे वस्तुए ने तँ अधला भऽ गेल..!

अधला वस्तुक विचार मनमे जगिते जीवानन काका आड़िपर सँ उठि खेतमे धँसला।

खेतक पहिल गाछक लत्तीपर नजैर देलैन। पाँचटा फल सिरगर बाँकी लत्तीक ऐगला फल टेंटी-टापर। पहिल गाछक फल देख जीवानन काका हिया कऽ खेत दिस तकला। पाँच कट्ठामे खेती अछि डेढ़ साए गाछ रोपने छी, एकटा गाछमे पाँचटा सिरगर फल भेल। डेढ़ साए गाछमे साढ़े सात साए भेल, जँ दसो रूपैये बिकाएत तँ पचहत्तैर साए ओहिना भेल। पाँच कट्ठामे पचहत्तैर साए कम नइ भेल। किएक तँ अपना ऐठामक जे जमीन रोगसँ रोगग्रस्त भऽ गेल अछि, तइ खियालसँ। ओना, जँ ओही सजमैनक बीच जे बीआ अछि जँ ओकरा बीज रूपमे पैदा कएल जाएत तँ ओ लाखोक हएत। एक रूपैआसँ लऽ कऽ तीन रूपैआ तकक प्रति बीआक दाम बजारमे अछि। मुदा ऐठाम बीआ बनबैक बात नहि, तरकारीक बात अछि, सजमैनक उपजाक अछि।

पचहत्तैर साए रूपैआक हिसाब जीवानन कक्काक मनमे अबिते दोसर विचार कुदि पड़लैन। कुदि ई पड़लैन जे जेकरा गरमा फसिल कहै छिऐ ई तँ मात्र ओ भेल, बाँकी बरसात आ जाड़ बँचले अछि। जखन एक मौसममे पनरह साए रूपैआ एक कट्ठाक उपज भेल तखन बीघाक भेल तीस हजार। तीन मौसमक माने भेल नब्बे हजार। नब्बे हजारक उपज जँ एक बीघाक हएत तखन ने खेतीक आगू बढ़बारि हएत। दस-बीस बीघा खेतबला सभ शहरक सड़कपर घुमि रहला अछि। ओना, अपन सजमैनक परिस्थिति आ गाम-समाजक बीचक जे हवा बनि गेल अछि ओइ हवामे जीवानन कक्काक मन छहराए लगलैन। छहराइत-छहराइत मन तेना थीर भऽ गेलैन जे कोनो बेचैनी मनमे रहबे ने केलैन।

पाछू उनैट कऽ ताकिते जीवानन काकाकेँ मन पड़लैन अखन तक

जलखैइयो ने केने छी। अनेरे कोन लाभ-हानिक झमेलमे मनकेँ वौऐने छी। मन समगम भेलैन।

समगम भेल जीवानन काका घर दिस विदा भेला। ओना, मनमे रहि-रहि कऽ सजमैनक बेथाक टीस मारबे करैत रहैन मुदा जहिना बेथाक टीस तहिना पेटक टीस सेहो रहबे करैन। ओना, विचारसँ जीवानन काका अपन मनकेँ बेर-बेर संतोख दैत रहला जे मनुख कर्मक भागी छी, जेना गीतो कहैए। अपन कर्ममे केतौ चूक कहाँ देखै छी, जँ कर्ममे चूक रहैत तँ एहेन उपज केना भेल? मुदा उपज भेलो पछाइत जँ समुचित लाभ नइ भेल तइमे केतए दोष अछि..?

जखन बजार दिस तकैथ तँ अनुकूले-अनुकूल बुझि पड़ैन। माने ई जे तेहेन लगन-पाती भेल अछि जे मांगे-मांग होइत, से नहि भेल। तँए जीवानन कक्काक मनक सुरखीमे मलिनताक तमस आबिये जाइन।

दरबज्जापर अबिते पत्नीपर नजैर पड़लैन। जलखै-बेर उनहल देख सुदामा काकी बेर-बेर दरबज्जापर आबि-आबि देखैत रहथिन जे एला की

नहि।

जहिना जीवानन कक्काक नजैर सुदामा काकीपर पड़लैन तहिना सुदामा काकीक नजैर सेहो जीवानन काकापर पड़लैन। नजैर पड़िते सुदामा काकी चेहराक सुरखीसँ आँकि लेलैन जे मनमे कोनो-ने-कोनो कुवाथ जरूर छैन। मुदा किछु पुछैसँ पहिने नीक हएत जे जलखैक चर्चा करी।

सुदामा काकी बजली-

“कोन मुलुक चलि गेल छेलौं जे जलखैयो तियागि देलिऐ?”

ओहन लोक जकाँ तँ जीवानन काका नहियेँ छैथ जे प्रश्न आगूमे किछु औत आ तमसेलहा मने वा वौएलहा मने जवाब किछु देब। आगूमे जलखैक प्रश्न छेलैन तँए मनक सभ ओझरीकेँ मनक बैगमे रखैत बजला-

"कोनो आन मुलुक थोड़े गेल छेलौं, छेलौं ते अपने मुलुकमे, मुदा... ।"

'मुदा' कहि जीवानन काका तेना ठमैक गेला जेना दुखे बकार बन्न भऽ गेलैन। तेकर कारण छल जे मनमे उठि गेलैन- पत्नी तँ हमरे आश्रित छैथ, मुदा आशक तँ बाटे कटिया गेल तखन तोष-भरोसक बात की कहबैन? जीवानन कक्काक मनक मलिनता आरो बढ़ैत गेलैन जे सुदामा काकी बदलैत रूपकेँ सेहो आँकि रहल छेली। ओना, मने-मन ईहो उठि रहल छेलैन जे पीड़ितकेँ बेपीड़ित बात पुछबो ओतेकाल नीक नहि जेतेकाल पीड़ित अपन पीड़ाकेँ प्रसुति नइ करै छैथ। तँए अपन पत्नीत्वक विचार करैत सुदामा काकी बजली-

"कहू! जलखैक बेर उनैह गेल, भूखे-पियासे मन सेहो बेपीड़ित भऽ विपरीत भऽ गेल हएत। पहिने अन-जल कऽ लिअ। पछाइत दुनियाँ-दारी दिस देखब।"

पत्नीक विचार जीवानन काकाकेँ प्रभावित केलकैन। हाथ-पएर धोइले कल दिस बढ़ला।

..हाथ-पएर धोइ कऽ आँगन अबिते पत्नीक आकर्षक–जलखैक हेम-छेम–आन दिनसँ किछु बेसी बुझि पड़ैलैन। मुदा जीवानन कक्काक अपन हेम-छेमक कटाएल रस्ता मनकेँ उठैये ने दैत रहैन। बेर-बेर मनमे उठि जाइत रहैन जे अपन हारल जिनगीक बात केना कहबैन? अपन टुटैत जिनगी देख अनेरे मन तीताइन भऽ जेतैन..!

तँए अपन मनक बेथाकेँ जीवानन काका अपना मनेमे मुड़िया-मुड़िया मोड़ि-मोड़ि रखए चाहैथ।

जहिना तबधल लोककेँ सरोवरमे पएर पड़िते जलन-तपनक बीच संघर्ष उठि जाइए, जड़ाएल लोककेँ आगि भेटिते तपन-जलन हुअ लगै छै तहिना आधासँ अधिक जीवानन काकाकेँ भोजन केला पछाइत सुदामा

काकीकेँ हुअ लगलैन। मन मानए लगलैन जे आब जिनगीक लीलाकेँ आगू बढ़ौल जा सकैए। बजली-

"सजमैनक खेतक की हाल अछि?"

पत्नीक बात सुनि जीवानन काकाकेँ ओहिना मनमे भेलैन जहिना कोनो परदेशी अपन पत्नीक अनेको मनकामना लऽ परदेश जाइए आ कमेला पछाइत जखन गाम घुमैए आ रस्तेमे सभ कमेलहा या तँ कटि जाइ छै वा छीना जाइ छइ... ।

ओना, मनमे ईहो उठैत रहैन जे गीतामे कर्मक आगू फल अही दुआरे कृष्ण छिपा कऽ रखला जे कर्ता स्वयं अपन बूझत..!

जीवानन काका बजला-

"हाल की रहत, बेहाल अछि!"

पतिक 'बेहाल' सुनिते सुदामा काकी चौंकली। चौंकली ई जे जँ पतिक हाल-बेहाल तँ पत्नीक हाल केना सुहाल बनि सकैए? मुदा की बेहाल, से तँ सुनला पछातिये ने बुझब। पुछलखिन-

"की बेहाल अछि?"

पत्नीक पुछबसँ जीवानन कक्काक मनक धुकधुकी तेज हुअ लगलैन। धुकधुकाइत मने बजला-

"पहिने असथिर से जलखै करए दिअ, पछाइत दरबज्जापर बैस सभ किछु नीक जकाँ कहब।"

'सभ किछु पछाइत' सुनि सुदामा काकीक मनमे सेहो धुकधुकी उठि गेलैन। मनमे उठलैन- सभ किछुक माने एकेटा बात नहि, अनेको भेल! जखने अनेको विचार वा अनेको समस्यासँ लोक घेरा जाइए तखने ने ओ बेबस हुअ लगैए। जखने कियो बेबस भेल तखने ओकर स्वच्छन्दता मेटा लगै छै, जे मृत्युक कगार तक पहुँचबैए..! मुदा बजली

किछु ने। मनमे बेर-बेर घुरिया लगलैन जे मनुष्य जँ चिड़ै जकाँ स्वच्छन्द भऽ अकासमे नइ उड़ि सकल तँ ओकर जिनगीए की आ जीवने की? मुदा चुप ऐ दुआरे भऽ जाथि जे जेते मने-मन खोद-वेद करैथ तेते ओझरियाइये जाइथ। एक तँ अपना मने बेथित छैथे आ तैपर हमहूँ ऊपरसँ लादि दिऐन, ई सेहो केहेन हएत? तँए सुदामा काकी सहमल रहली...।

जलखै केला पछाइत जीवानन काका हाथ-मुँह धोइ, लोटा रखि दरबज्जाक चौकीपर बैस पत्नीकेँ सोर पाड़ैत बजला-

“कनी एमहर आउ।”

सुदामा काकी बुझि गेली जे पति-पत्नीक बीचक खेल यएह ने छी जे जखन पति पीड़ित रहैथ तखन हुनका उतपीड़ी-ले सुपीड़ी बनि नइ पूजब तखन पतिक पत्नीए की। तहिना पत्नीक बेपीड़ित अवस्था सेहो छी। मुदा बेपीड़ितक सेहो दू अवस्था अछि, नमहर-ले छोटक तियाग आ छोट-ले नमहरकेँ धकियाएब। मुदा ई विचारणीय विषय अछि जे पति-पत्नीक स्तरमे एकत्व भेला पछाइत होइ छइ। मुदा तइमे भारी खाधि अछिए, माने छीपा-पनार अछिए। अपन नव चेहराक छम-छमी बनबैत सुदामा काकी छमैक कऽ आगूमे ठाढ़ होइत बजली-

“भगवान केकरो ऊपर दहिन छैथ तँ अपनो दुनू परानीपर छैथ।”

पत्नीक बात जीवानन कक्काक कानमे पड़िते ठेकी जकाँ बैस अपन मनक बातकेँ ठेकिया देलकैन। ठेकियाइते बजला-

“से की?”

पतिक प्रश्न सुनि सुदामा काकीक मनमे भलैन जे आब छोर पकड़ा गेल! बजली-

“ओछाइनपर भोरे यएह ठिकियबै छेलौं जे अपना सभसँ बेसी उमेरक लोक समाजमे, गाममे केते बँचल छैथ आ अपन संगी-साथी केते दुनियाँ छोड़ि देलैन।”

सुदामा काकीक बात सुनि जीवानन काका आरो भँसियाए लगला। भँसियाइत बजला-

“नाम मन अछि?”

सुदामा काकी बजली-

“ए-गो-आध-गो रहैत तहन ने, से तँ दर्जन-सोड़ेमे अछि।”

“दर्जन-सोड़ेक ठेकान अछि?” -जिज्ञासू चिड़ै जकाँ जीवानन काका बाजि कऽ मुँह खोलनहि रहला।

मुस्की दैत सुदामा काकी बजली-

“जहिना अज्ञानी औरत अपन श्रमसँ गाए पोसि दूध पैदा करै छैथ आ पौए-पौए बेच घरक देवालपर डाँरि घीच-घीच अपन हिसाब जोड़ै छैथ तहिना मनक डायरीमे हमहूँ लिख कऽ रखने छी।”

आरो जिज्ञासु भऽ जीवानन काका बजला-

“मुँह जवानियेँ कनी सुना दिअ जे अपनो ठेकान करब।”

सुदामा काकी बजली-

“बेसी उमेरक तँ दर्जन-सोड़ेमे नइ छैथ, मुदा गाही-गण्डामे जरूर छैथ।”

जीवानन काका आरो उताहुल होइत बजला-

“संगी-साथी?”

सुदामा काकी बजली-

“संगी-साथीक तँ दुनियेँ छी मुदा ओ हिसाब दर्जन-सोड़ेमे नइ कएल जा सकै छै, मुदा ओकर अनुपातिक हिसाब तँ अछिए।”

उत्तेजित होइत जीवानन काका बजला-

“सएह सुनाउ?”

अपन गुरुत्वक भार सम्हारैत सुदामा काकी बजली-

“अनकर पाछू अनेरे केते वौआएब, अपन पछुआकेँ पछुआउ।”

धारक धारामे भँसियाएल कतियाइत-कतियाइत जहिना कोनो चीज किनछैर लगैत तहिना जीवानन कक्काक भँसियाएल मन किनछैर लगलैन। बजला-

“तीन मासक जिनगी हलेल गेल।”

पतिक बात सुदामा काकी नीक जकाँ नहि बुझि पेली। तँए बुझैक रस्ता पकैड़ बजली-

“से की?”

पत्नीक ‘से की’ सुनि जीवानन कक्काक मनक झाँपल परदा हटलैन। हटिते पत्नी दिस नजैर उठौलैन। नजैर उठिते मनमे बिसवास जगलैन जे अखन केहनो नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला बात पचबै-जोकर मन खन्हाएल छैन। समगम होइत कहलखिन-

“सजमैनक खेती डुमि गेल!”

‘सजमैनक खेती डुमि गेल’ सुनिते सुदामा काकीक बिसवासू मन एकाएक विस-विसाइन हुअ लगलैन। ओना, बहुत विस-विसाइन नइ भेल छेलैन मुदा जीवानन कक्काक आँकमे चलि एलैन। दोहरबैत बजला-

“बहुत आशासँ खेती केने छेलौं, मुदा तैपर पानि पड़ि गेल!”

पतिक बात सुनि सुदामा काकीक मन ऊपरसँ निच्चा उतरलैन। उतरैक कारण भेलैन जे कहाँ मन डुमि रहल छेलैन आ कहाँ लगले पानियेँटा फेड़ेलैन, जे बुझै छेलौं से बात नइ अछि। तइसँ कम अछि। मुदा केते कम अछि आ केते कम भेल से तँ बिना खोंचारे नइ बुझब...।

खोंचार चलबैत बजली-

“से की? कोनो ठेकनगर बात लगिते ने अछि।”

पत्नीक विचार सुनि जीवानन कक्काक मन पोखरिक पानि जकाँ असथिर भेलैन। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे जिनगी तँ धारा छी, ई पोखरिक पानि जकाँ असथिर केना भऽ सकैए। जिनगी तँ गतिशील अछि। गतिये-गति चलैए। वएह गतिमे ने कुगतिक संभावना बढ़ि गेल अछि। मुदा ई बात पत्नी कोन रूपे बुझती..?

अपन मजबूरी देखबैत जीवानन काका बजला-

"यएह ने नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी जे गुणशील गुणहीन केना भऽ गेल।"

ओना, सुदामा काकीक वौद्धिक स्तरसँ जीवानन काका वाकिफ छैथ, मुदा भ्रम जालमे भ्रमित करैले अपन सीमापर सँ बाजि रहल छला। तैबीच सुदामा काकी बजली-

"जखन अहीं नइ बुझि पेब रहलौं अछि, तखन हमरा केना पतियाएब?"

पत्नीक बातसँ जीवानन कक्काक मनमे सवुर जगलैन। बजला-

"आब तँ चाहो-पानमे कटौती करए पड़त!"

एक तँ चाह-पान सन अदना वौस, तैपर सँ ओहूमे कटौती हएत तखन आरो जे नमहर-नमहर काज छैन से केना चलत? सुदामा काकीक आँखिमे चिन्तनक मजगूत रेख उतैर गेलैन। आँखि कड़ुआए लगलैन। बजली-

"तखन?"

'तखन' सुनिते जीवानन काका बुझि गेला जे समाधानक बाट पत्नी जोहि रहली अछि, तँए निर्णय रूपमे नहि तात्त्विक विवेचन रूममे जेते नीक जकाँ बुझेबैन तेते नीक जकाँ बुझती आ जेते नीक जकाँ बुझती तेते परिवार आ परिवारजनकेँ आदर करती। किएक तँ एतेक सीमा दुनू गोरेक बीच बन्हले ने अछि जे पति हमहीं रहबैन आ पत्नी वएह रहती, तैबीच जँ

कनी नोनगर आकि अनोन भऽ गेल तँ जिनगीक लेल ओ छोट-क्षीण बात भेल किने।

अपन स्तरसँ (वैचारिक नहि भाषायी) उतैर जीवानन काका बजला-

“अखैन तक हमहूँ आ भरिसक अहूँ यएह ने बुझै छिऐ जे सजमैन गुणकारी तरकारी छी, तँए अदौसँ खान-पानक चलैनमे अछि, मुदा भोज-काजमे सजमैनक मांग कम भऽ रहल अछि। माने भोज्य विन्याससँ कतिया रहल अछि जइसँ मांग कमि गेल अछि।”

परती खेतमे ताम-कोरक पछाइत जहिना कोनो फसिल लहलहा उठैए तहिना सुदामा काकीकेँ सेहो भेलैन। अपन हाथ देखबैत बजली-

“केते भोज-काजमे सजमैनक तरकारी ऐ हाथे बनौने छी तेकर ठेकान नहि। मुदा ऐ साल जे पाँच-सात गो भोज खेलौं, तइमे केतौ ने सजमैनक दर्शन भेल!”

पत्नीक विचार सुनि जीवानन काका तोषपूर्ण शब्दमे बजला-

“अखन जीवित छी तँए जीबे करब मुदा जिनगी भरि जेकरा (माने सजमैनकेँ) नीक बुझैत एलौं ओ एना अधला किए बनि गेल। की ओकर गुणशक्ति कमि गेल आकि खेबैयाक मनक चस्की बढ़ि गेल?”

पतिक विचार सुनि सुदामा काकीक मन सहैट कऽ सहैम गेलैन। पत्नीक रूपमे अपनाकेँ देखैत बजली-

“जखन संगे जीवन-मरण अछि तखन हवा-बिहाड़िक डर करब तँ जीब पएब।”

मुस्की दैत जीवानन काका बजला-

“सएह कहलौं... ।”

❑ साभार : त्रिकालदर्शी

बड़की माता

“अनसोहाँत भऽ गेल! एहेन कहियो ने देखने छेलिऐ!”

-ओछाइनपर पड़ल, अपन कुहरब छोड़ि अठासी बर्खक मंगली दादी बजली।

जहिना बाट चलैत बटोही हारि-मारि थकान पीड़ासँ पीड़ाएल बजैत तहिना मंगली दादी सेहो बजली। दोसराइत लगमे नै तँए कियो नै सुनि पौलक। जहिना अकासमे मेघक टुकड़ी उड़ि-उड़ि सुर्जक प्रभाकेँ झँपैत तहिना सोगाएल सोग दादीक बोलतीकेँ झाँपि देलकैन। जइसँ बोलती तँ बन्न भेलैन मुदा विचार भीतरे-भीतर सुरकुनियाँ मारि बिचड़ए लगलैन। जुग बदैल गेल वृन्दावनक गोपी एक सेकेण्डक सतरह सौमा भागकेँ जुग मानि कृष्णसँ अलग नै हुअ चाहैत, मुदा से थोड़े अछि। अनेरे कियो बजैए जे कलयुग अखन ढेरबे भेल अछि, समरथाइयो पछुआएले छै आ औरुदो बहुत बाँकी छइ। केता हजार बर्ख आरो रहत।

मनमे बिचैरते रहैन आकि दुबटिया लग पहुँच गेली। पहुँचते विचार उचड़लैन, ऐ बीच तँ मनुखक केता पीढ़ी गुजैर जाएत! मनुखक जिनगीए केतेटा होइ छै! तहूमे चारि टुकड़ी अछि। जँ साए बर्खक मानब तँ पचीस-पचीस बर्खक टुकड़ी भेल, नै जँ अस्सी मानब तँ बीस बर्खक भेल आ जँ सरकारी मानब तँ साठि बर्खक पनरह बर्ख भेल। तइ हिसाबसँ कलयुगक

किए ने बेसी औरुदा पछुआएले छइ। तैबीच पोता मनोज आबि अँगनामे बाजल-

"दछिनबरिया टोलमे बड़की माता एलखिन, तँए ओइ टोल दिस नै जाएब।"

आँगनमे दोसराइत नै, ओछाइनपर पड़ल मंगली दादी जोरसँ पोताकेँ सोर पाड़ि पुछलखिन-

"बौआ की भेल दछिनवारि टोलमे?"

दादीक प्रश्न मनोजक मनकेँ जेना धक्का मारलक। धक्का मारलक ई जे दादी पुछलैन। लगमे आबि मनोज बाजल-

"दादी, दछिनवारि टोलमे बड़की माता एलखिन, लोक सभ बजैए जे ओइ टोल नै जइहें।"

एक तँ झूनाएल पाकल टूर खसैत दादीक स्मरण शक्ति, तैपर 'बड़की माता' सुनि असल अर्थ नै बुझि सकली। बुझबो केना करितैथ माएसँ दादी ने बनि गेल छेली। पोताक बातकेँ सुनि मनमे रखि लेली जे बेटा औत आकि पुतोहु तँ पुछि लेब। बालवोध क्याँने गेल जे बड़की माता केकरा कहै छइ। देवियो होइए आ दानवियो होइए। जीवनदानियो होइए आ लेनिहारनियोँ होइए। भेल ई जे रोदियाएल सौन भऽ गेल। खाली सौने नै, रौदियाएल अखाढ़ो ने बरिसल। फागुन-चैतक मधुआएल रौद बढ़ैत-बढ़ैत अग्नि स्वरूपा बनि पृथ्वीकेँ गरैस लेलक। अग्नि स्वरूपा बनबो केना ने करैत? पानिक छुतिये ने समापत भऽ गेल।

अपन सहयोगीक भरपूर सहयोग भेटबे केलै। रस्ता–बाटक बैसल माटि गर्दा-धुरा बनि धुरिया पकैड़ अकासक रसकेँ चुसि लेलक, गाछ-बिरीछ अपन हरितमा तियागि पीड़ासँ पीड़ा धरतीपर झड़ि गेल। पोखैर-इनार, धार-धूर माटिक खाधि बनि गेल। सुरूजक प्रखर प्रभाकेँ धरती-अकास बीचक सेना नै रोकि हारि मानि कतबाहि धऽ लेलक, एहेन

स्थितिमे कालचक्रक पूजा केहेन हएत? गामे-गाम रंग-बिरंगक तपाएल तप रोग-वियाधिक संग छोटकी मातासँ सैझली, मैझली बड़की माता पसैर गेल! एक तँ ओहिना समैयक गरुआएल गरमी तैपर देहक तपित तापसँ तपीआ जिनगीक कठिन परीक्षामे गामक-गाम लोक फँसि गेल।

शुरूमे जखन दछिनवारि टोलमे चेचकक आगमन भेल आकि एके-दुइए मुहेँ-काने सौंसे गाम समाचार पहुँच गेल। मैयाक आगमन होइते ओझहा-धामिक संग झालि-मिरदंग उठि कऽ ठाढ़ भेल। रंग-रंगक प्रहार टोलपर हुअ लगल। ओ सभ तीन सालसँ गहवर खसा अनठौने अछि। तेकरे फल भेट रहल छइ। तेतबे नहि, आनो गामक आ आन टोलोक आएब-जाएब घटैत-घटैत घटिया गेल। एक्कैसो घरक टोलकेँ जेना गामो आ आनो गाम जरै-मरैले छोड़ि देलक।

छोटकी माता अपन रूप बढ़बैत गेल। जहिना शरीरमे बढ़ल तहिना मौसमो बढ़ैत संग-संग चलए लगल। एक्कैसो परिवार रोगसँ आक्रान्त भऽ गेल। ओना, दछिनवरिये टोलटा नै गामक आनो टोल आ आनो-आनो गाममे वियाधि पसैर गेल।

ओछाइनपर पड़ल मंगली दादीक मन फड़फड़ेलैन। मैयाक आगमन तँ चैत-बैशाख आकि आसिन-कातिकमे होइ छेलै, जखन रीत-बेवहार बदलै छइ। अखन तँ सौन छी तखन किए भेल? अखन तँ बाध-बोन हरिआएल रहैत, पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ चर-चाँचड़ जलजलाएल रहैत, से किए ने अछि? मासक ठेकान तँ दादीकेँ मन पड़लैन मुदा मौसमक ठेकाने ने रहलैन। ठेकानो केना रहितैन, घरहटिया घरहटक समैयक लछन-करम ठेकना नक्षत्र मन रखैए, किसान किसानी आ बेपारी बेपारक, से तँ आब दादीमे नै रहलैन। तँए मन नै बुझि पेलकैन। मुदा सुनाएल मन सपनए लगलैन। सपनाइते खापड़िक मकैक लाबा जकाँ चनैक धरतीपर खसलैन। खसिते चनचनेली-

“कहाँ दन साते-आठेटा मखानक फोंका जकाँ देवसुनराकेँ तेहेन निकैल गेल अछि जे तनो-भगन-वेनग्र भऽ गेल अछि। बापो-माए डरे लगमे नै जाइ छइ। जेबो केना करतै। जखन एक्के घरक सातटा स्त्रीगण सात सीढ़ीमे तेना बँटा जाइए जे मनुखक शक्ले-सुरैत बदैल जाइ छै, तहिना ने बरो-बेमारीक अछि। साधारण पेटझड़ीबला जँ रद-दसबला टोल जाएत तँ जानियेँ कऽ ने ढोढ़ीया बीखकेँ गहुमनेक बनौत... ।”

एक्कैसो घरक टोलमे ने एकोटा परिवार नागा रहल आ ने एक्कोटा मनुख। जहिना दुनियाँक सभ पुरुखकेँ नारीक संग कऽ देल जाइ छै, तहिना। टोलक सभ चेचक वियाधिसँ व्यग्र भऽ गेल। के केकरा देखत। सबहक मन कहै, जान रहत तखने ने जहान। जँ जाबे से नै रहत तँ जहाने की। सभ दिन सभ काल दुनियाँक उदए-परलए तँ होइते छै, तँए कि सभले एक्के होइ छइ। दुनूक फैंट-फाँटमे जे जेहेन बीछिनिहार रहल ओ ओहेन कऽ बीछि लइए। अनायास स्मृति जगलैन। जगिते मन पड़लैन अपना देहमे भेल चालीस बर्ख पहिनुका चेचक। मझिली मैया मन पड़िते देह ओहिना सिहरि गेलैन जेना बर्खाक बून पड़िते अकासमे उड़ैत चिड़ैकेँ होइत। एक तँ उमेरक जर्जर अंग तैपर चालीस बर्खक स्मृति तेना कऽ मंगली दादीकेँ गरैस लेलकैन जे गराँसक चोटसँ जहिना अंग भऽ जाइत तहिना भऽ गेली। बेथाएल तन-मन तेना अकैड़ दबलकैन जे मुँह भरभरेलैन-

“हे भगवान! अनेरे कोन नरकमे रखने छी, कहिया धरि राखब।”

मुदा लगले मन बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे जाबे आँखि तकै छी ताबे अहिना ने होइतो रहत आ देखबो-भोगबो करैत रहब। तइसँ नीक जे लऽ चलू जिनगीक ओइपार जैठाम ई सभ नै देखब।

ओसारक दछिनवारि भागमे मंगली दादीक ओछाइन, तहीबीच बेटा बुधियार आँगन पहुँचल। माइक सभ बात तँ बुधियार नै सुनि सकल

मुदा अन्तिम बात, 'लऽ चलू...।' सुनलक। सुनिते बुधियारक मनमे उठल, माए की बाजि रहल अछि! झब-दे लऽ चलू केतए लऽ चलू? मन मुड़ियाएल। मुड़ियाइते भेल जे भरिसक रोग-पीड़ासँ रोगाएल-पीड़ाएल मन तड़ैप रहल छइ। फेर भेलै जे अनेरे मनकेँ औनाबै छी। माइयो कियो आन थोड़े छी जे पुछैमे संकोच हएत। बाजल-

"माए, की भेलौ, एना किए बजै छेँ?"

बुधियारक बोल सुनि मंगली दादीक हूबा जगलैन हूबगर होइत बजली-

"सुनै छी जे गाममे मैयाक आगमन भेल अछि?"

माइक बात सुनि बुधियार तारतम करए लगल जे माए लग झूठ केना बाजब? तहूमे जखन कहियो ने बजलौं, मुदा प्रश्नक जवाबो केना देब। जहिना दछिनवारि टोलक रस्ता छोड़ि देलौं, तहिना तँ उतरवारियो टोलक। फेर तखन केना हँ कि नै कहबै। जहिना चिड़ै लोलसँ बोल मिलबैत तहिना बुधियार माइयक बोलसँ बोल मिलबैत बाजल-

"हँ, माए ठीके भेल अछि।"

बेटाक बोल सुनि मंगली दादीकेँ सुआस पड़लैन। दोहरबैत बजली-

"आनो-गाममे भेल अछि आकि अपने गामटा मे?"

दादीक मन बढ़ैत देख मनमे भेल जे अखन धरि सुनलेहे बजलौं, आन गामक जँ बाजब आ अढ़ा दिअए जे अपनो कुटुम-परिवार तँ ओइ गाममे अइछे, कनी जिगेसा कऽ आबह तखन तँ भारी पहपैट हएत। रस्ता–पेरा केतए फँसि जाएब तेकर ठीक अछि। बाजल-

"माए, कनी नीक जकाँ भँजियबै छी तखन नीक जकाँ कहबौ। सुनै छी जे कहाँदन ओझहा-धाइम भाउ खेलाएल तँ कहलकै, गामक सीमान बान्हि देलियह, तखन तँ जानक बदला जान दिअ पड़तह।"

मंगली दादी पुछलखिन-

“वैद की कहलकै?”

ओझहा-वैदक नाओं सुनि बुधियारक मन मानि गेल जे बिना झूठ बजने काज नै चलत। मुदा जहिना बाल-वोध तहिना थाकल-ठेहियाएल बुढ़-बुढ़ानुसकेँ बौसब बड़ भारी नहियेँ अछि। बाजल-

“अनेरे कोन फेड़मे पड़ै छेँ। राम-राम कर सभ नीक भऽ जेतै।”

‘राम-राम’ सुनि मंगली दादी तारतम करए लगली जे ‘राम-राम’ की कहलक। मरैकाल राम-रामकेँ सत् लोक मानैए। अधला काज केला पछाइत राम-राम कहि दुतकाइर दइ छइ। शुभ काजक बेर जँ राम-नाम सत् छी बाजब तँ कपर फोड़ौबैल करा लेब, तखन बुधियार की बाजल। माइयो रगड़ी बजली-

“बौआ, ओझहो-गुणी नै देखलक-सुनलक हेन?”

माइक रगड़गड़ बात सुनि बुधियार रगड़ाइत बाजल-

“नेति-नेति कहि कातेसँ छुअब छोड़ि सतदिना रोग कहि जीबै-मरैले छोड़ि देलक।”

❑ साभार : पतझाड़

पोखला कटहर

पान साए रूपैआ खरच भेला पछाइत झबरी काकीकेँ अदहा छूटपर एक हजार रूपैआ बैंकसँ लोन भेटलैन। अखन धरिक जिनगी बोइन-बुत्ताक रहलैन तँए ओहन रोजगार चाहैत रहैथ जे करि सकैथ। ओना, झबरी काकीक घरे लग रोजगरनी सभ छैन मुदा जातिक विभाजन काजोकेँ कम सक्कत विभाजित नै केने अछि। तँए लगमे रहितो झबरी काकी अनाड़ीक-अनाड़ीए छैथ। मुदा पुछबो केकरा करथिन। एक हजार रूपैआक बात अछि। के केना झपैट लेतैन तेकर ठीक नहि...। काकीक घरक आगूए-क रस्ता-देने श्याम जाइत रहथिन। श्यामकेँ देखते काकी टोकि देलखिन-

“बौआ सियाम, तोहीं सभ ने बेटा-भातीज भेलह। रोजगार करैले एक हजार रूपैआ लोन देलक हेन।”

झबरी काकीक बात सुनि श्याम नजैर खिड़ौलैन। बगलेमे देख कहलखिन-

“पचहीवालीकेँ सोर पाड़ियौ।”

पचहीवालीकेँ अबिते श्याम पुछलखिन-

“भौजी, अहाँ अपना संगे तरकारी बेचैक लूरि सिखा दियौ। अपनो

किछु पूजी भइये गेलैन। ऐ बेर तेते आम फड़ल अछि जे कटहरकेँ के पुछत। ओना, बेसी फड़ने पोखलाहे कटहर बेसी अछि, मुदा चौथाइ कमाइ लऽ कऽ बेच लिअ।”

❑ साभार : बजन्ता-बुझन्ता

राकशे रहि गेलौं

जेठक पुर्णिमा भऽ गेल, मुदा संक्रान्ति लेखे चारि दिन बाँकी अछि। मास दिनसँ बरखा नइ भेने मौसमक रूखिये उलटै-पुलटैए। जे हवा मौधोसँ मीठ होइए ओहो भूखे-पियासे तरैस अगिया नोन-छराहोसँ नोन-छराह भऽ गेल...। दुखक जिनगी बितौनिहारि कोनो बाला जहिना बिआह भेला पछाइत विधिवत् पति-धरम निमाहैले अपनाकेँ संगीक सपना देखैए तहिना गाछीक सिनुरिया सरहीक सिनुराएल मन आ गुलबिया गुलाबखासक ललियाएल मन गाछीक अस्वस्तता निरवहन सेहो करिते अछि...।

पोखैर-इनार हटैक कऽ चटैक गेल, बाधक मटिआर खेतक छाती छहों-छीत भऽ फटि-फटि कऽ अलैग गेल, मुदा मौसमक छाती पघील नइ रहल अछि। समयकेँ जहिना अपन गति-मति छै तहिना लोकोक तँ छइहे।

टहटहौआ रौद रहौ कि झमझमौआ बरखा, आमक मास छी, बगबार मचकी बनेबे करत, मोटगर डारिमे मोटगर झूलाक मचकी लगबे करत, तीन-जने बैस झूलबे करत आ बरहमासाक तेसर मासक आ चौमासाक जुआनी मासक गीत गेबे करत। आ जँ से नइ भेल तँ जेठुआ रंगे-रूप की...।

बौआ भैयाक आ अपनो कलम-गाछी एकेठीम अछि। सझिये मचान-खोपड़ी अछि, फैजली आमक गाछक निच्चाँमे मचान-खोपड़ी बनौने छी।

एगारह बजे दिनमे खा-पी कऽ जहिना गाछी हम पहुँचै छी तहिना बौओ भैया पहुँच जाइ छैथ। नमगर-चौड़गर मचान ऐछे दुनू गोरे एके सिरहाने पड़ल-पड़ल आमक गाछीक ओगरवाहियो करै छी आ रंग-रंगक गपो-सप्प तँ करिते छी।

आइ गाछीक सीमानपर एकेबेर दुनू गोरे पहुँचलौं। ओना, घर दुनू गोरेक लगेमे अछि मुदा बीचमे प्रधानमंत्री सड़क योजनाक सड़क बनने, गामक रस्ते दुनू गोरेक बदैल गेल अछि। जहिना गाछी-बिरछीक तहिना गामक टोल-पड़ोसक। जाबे सड़क नइ बनल छल, गाड़ी-सवारीक एते दौड़ नइ छल, दुनू गोरे बेसी काल एकेठाम रहितो छेलौं।

बौआ भैयापर नजैर पड़िते बुझि पड़ल जे कोनो बेथे बौआ भैयाक मन टुटि कऽ जेना केतौ लसैक गेल छैन। मुदा बच्चेसँ दुनू गोरे एकठाम रहलौं, जहिना बौआ भैयाकेँ हम चिन्है छिऐन तहिना ओहो हमरा चिन्है छैथ, तँए मन खसैक माने खाली दुखे-बेथा नइ होइ छै, करमो होइ छइ। संगे दुनू गोरे बी.ए. पास केने रही। संयोग ई रहल जे वेचारा अपन नथिया निकालि लोअर-प्राइमरी स्कूलमे नोकरी केलैन आ हम अपन जिद्द धेने रहलौं जे क्षमतानुसार काज करी।

बातो विचारैबला अछि जे जे बी.ए. पास अछि ओ हाइ स्कूलक विद्यार्थीकेँ पढ़ा सकैए, तैठाम जँ लोअर प्राइमरी स्कूलमे जा पढ़ाएत तखन मिडिल पास आकि ऐट-नाइन पास की करता? मनमे उठि गेल रहए जे कोनो गम्भीर विचार बौआ भैयाक मनकेँ दबने छैन, तँए खसल बुझि पड़ै छैथ। तहूमे अनका जकाँ ने हुनके मनमे छैन जे आगू भऽ कऽ केना टोकब आ हमरे मनमे जे कहियो ने उठल से केना उठत। गामक

हँसोरमे बौआ भैयाक गिनती छैन, जे बात गामक सभ बुझै छथिन, हमहूँ बुझै छी आ शिक्षक-मण्डली सेहो बुझै छैन आ जात-बरियात पुरनिहार तँ जनिते छैन जे जइ बरियातीमे बौआ भैया पहुँचला, ओइ बरियातीक सए-सबा-सए रसगुल्लाक पाचक बौआ भैयाक गप-सप्प छिऐन। हँसबैत-हँसबैत पचा देता। जहिना घूस उपहारक नाओंपर पचि जाइए।

खसल मनकेँ उठबैत बौआ भैया बजला-

“राकशक राकशे रहि गेलौं!”

बौआ भैया की बजला, से बुझबे ने केलौं- की राकशक राकशे रहि गेलौं? मुदा लगले धिया-पुताक मुँहक एकटा बात मन पड़ि गेल। मन पड़ि गेल जे पहिने गाछी सभमे राकश सभकेँ देखै छेलिऐ। ठाढ़ो हुअए आ चलबो करए, दौगबो करए, भुक-भुको करए। मुदा ओहो तँ ओही दिनसँ समाप्त भऽ गेल जइ दिनसँ लोक अछियामे खोंरनाठी जरबऽ लगल।

मन भेल, बौए भैयासँ पुछि लिऐन मुदा पुरना बात केना...; तँए चुपे रहलौं। मुदा बौआ भैया ओइ शिकारी जकाँ तीर फेंक हमरा पाछूसँ हियाबए लगला जे केते दूरक शिकार पकैड़ पेलिऐन। मने-मन तरतम्य करए लगला जे केहेन उत्तर अबैए। अकबकाएल आगू बढ़ैत मचान लग पहुँच गेलौं।

बौआ भैयाक गम्भीर नजैर देख अपन सेवकाइ अनिवार्य बुझाएल। तहूमे बौआ भैयाक बात बुझबे ने केलौं सेहो तँ हुनकेसँ भेटत तँए आगतो-भागत अनिवार्य तँ अछिए।

बौआ भैया निच्चेमे ठाढ़ रहला, आ अपने आगू बढ़ि मचानक ओछाइन ठीक केलौं। ओछाइनपर पड़ि सिरमापर मुड़ी सेरिऐबते रहैथ तखने मुहसँ खसलैन-

“एह! केतए गेल ओ दिन?”

बौआ भैयाक बात अनसोंहात जकाँ लगल। बाजि रहल छैथ

आकि बकि रहल छैथ? किछु फुरबे ने करए। तखन तँ भेल जे जहिना मूसक नाङ्गेर पकैड़ गणेशजी खेलाइ छला तहिना हमहूँ खेली...।

टोकलयैन-

“भैया, अहाँ बजैत जाइ छी, हम बुझबे ने करै छी।”

बौआ भैयाक मनमे जेना गुरुत्व जगलैन। डेढ़ इंचक हँसी हँसैत कहलैन-

“सुधीर, आगू देख पाछूक सुमार अबैए।”

बौआ भैयाक बात सुनि-सुनि छगुन्तामे पड़ल जाइत रही मुदा किछु भाँजे ने पबैत रही, जे एना किए बजि रहल छैथ...।

...तखन उपय? हँ एकटा उपाय तँ ऐछे जे भुतलग्गु जकाँ बकैले छोड़ि दिऐन। सएह केलौं अपन मुँह सुइया-डोरासँ सीब, दुनू कानकेँ खोलि, टेप जकाँ आगूमे रखि देलिऐन।

पुतोहुक दुतकार बौआ भैयाक मन-मिजाजिकेँ हौड़ देने छेलैन। अपना काने सुनलैन। पाँच बर्खक पोताकेँ पुतोहु ठोकले मुहेँ कहलखिन-

“बाबासँ पढ़ऽ नै जो। ओ पुरना पाठ पढ़ा, पछुआ देथुन।”

पुतोहुक बात सुनि बौआ भैया छगुन्तामे पड़ि मने-मन सोचि रहल छैथ, सत्तैर बर्खक पूर्ण जिनगी जिनीहारक कोनो मोले नै? की हम आमक गाछीक राकश छी?

पुतोहुक विचार बौआ भैयाकेँ छातीमे लगल टहकैत रहैन। मुदा दुख-सुख तँ मनक खेल छी, नइ कि मन। अहिना अबैत-जाइत रहै छइ। मुदा जेकर जिनगी हँसोरक रहल ओहो तँ लगले नहियेँ मेटाएब। बजला-

“की सासुर छल आ की पत्नी छेली!”

बौआ भैया जे बजला ओइ बीचमे किछु बाजि टाँग नइ अड़ेलौं। तँए एकहरफी बजैत रहैथ। फेर बजला-

"देहा-देही सम्बन्ध होइए। सासुर छल, जहिना सासुकेँ सुरजा दोकानक लालमोहन नीक लगै छेलैन, तहिना बुड़हाकेँ कालापानी पुरना छलिया आ सारि-सरहोजिकेँ अण्डाएल रौह। भऽ तँ गेल एते पुरती भऽ गेल सासुरक मान-दान बढ़ि गेल। आँगन-दरबज्जासँ उठि-उठि रस्ता तकैत रहता जे पहुनमा केतए ढोंरियाएल अछि।"

'मान-दान' मुहसँ खसिते जेना बौआ भैयाक बोलीक पाश बदैल गेलैन। दोहरबैत बजला-

"विद्यालयमे किछु गलती अपनो भेल। सोझे पढ़बै पाछू रहि गेलौं, अपने किछु पढ़ि नै पेलौं। जैठाम सए-पचास बाल-बोधकेँ पढ़ा रहल छेलौं, तैठाम ओकरा पढ़ब छुटि गेल, बालो बोध नइ भेल!"

बौआ भायकेँ अपसोच करैत देख कहलयैन-

"अनेरे बौआ भैया, चिन्ता करै छी?"

हँसैत बौआ भैया बजला-

"राकशो की सदिकाल कनबे करैए आकि हँसबो करैए। क्रन्दन-कोलाहले बीच ने हल बनि हलकबो करैए।"

बजैक सूरमे बौआ भैया बाजि गे ला, मुदा बुझि पड़ल जे कोनो नमहर पाथर कलेजाकेँ दबने छैन।

❑ साभार : खसैत गाछ

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर

एगच्छा आमक गाछ

प्रीगर शत्रु

दहेजुआ गाए

गठूलाक गारि

गण्डा

अब-तब

झूठे

उजगी

जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू

नोकरिहारा

अनका बेर ओंघी

लगबे ने कएल

ओ दिन

पान पराग

फोंक मकड़

झकास

ठोररंगू

हकार

ओझरी

दोती बिआह

कचहरिया रोग

नटकिया गति

भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल

पछताबा

परिवारक प्रतिष्ठा

पागलखाना

खाए चाहैए

गामे उपैट गेल

खतियाएल घर

किछु ने फुरैए

तिलकोरक तरुआ

पटोर

बेटाक चलैत

उग्रघारा

बेटीक कुभेला

दोहरी हाक

खिलतोड़

बापक चलैत

गाम बिसैर गेल

ठकहरबा

समैयक बेरबादी

न्याय चाही

रिजल्ट

बाल बोध

अपन गारि अपन दुआरि

सरही सौबजा

अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध

कन्हा भँट्टा

फलहार

गावीस मोइस

निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा

मानसरोवर यात्रा

गामक शकल-सूरत

मितक प्रयोजन

चैन-बेचैन

पाइक इज्जत

माघक घूर : 1

मधुमाछी

मति-गति

नैहराक धाड़

माघक घूर : 2

चहकल विचार

राक्षसक झड़

सद्विचार

पोखरिक सैरात

मनकमना

कटौज

किछु ने

हथियाएल खुरपी

झुटका विदाइ

खुदियाएल

गलती अपने भेल

बत्तु

असिरवाद उलैट गेल

उड़हैड़

खटहा आम
बुधि-बधिया
एकता
उमेरक लेहाज
केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन
धर्मक असल रूप
शिनीची सिनेह
नवान
असुध मन

महिरम
हाथक जिनगी
सिखबैक उपय
दनगर घास
ढकरपेँच

मुसरी आ घोड़ा
जाड़ फाटि गेल
मुँहक बात मुहेँमे
कनीटा बात
गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल
इज्जत उतैर गेल
चापाकलक पाइप
घसवाहि
चटवाह

दुरकाल
गामक कटान
मेटाइत जिनगी
कपटी मित
अजाति

परदेशी बेटी
घरदेखिया
ऊँच-नीच
ऑपरेशन
फेर पुछबैन

समधीन
कनमन
नमहर घरक चोइर
पटोटन
पुरुषार्थ

पेटगनाह

गंगा नहेलौं

बकठाँइ

गुलेती दास

खर्च

डॉक्टर हेमन्त

मनुखक मूल्य

तीन जुगिया भाय

आश्रम नहि सोभाव बदली

मायराम

शुभचिन्तक

विधवा बिआह

वैष्णवी भगवती

प्रेमी

शंका

मुइलो बिसेबैन

प्रतिभा

केतौ नै

हमर कोन दोख

असगरे

डीहक बटबारा

मूलधन

छूआ

लफ साग

नहरकन्हा

अपन सन मुँह

पाप आ पुण्य

चोरक चोरबती

मातृभूमि

कटा-कटी

हरदीक हरदा

बेरपर

झगड़ाउ-झोटैला

फॉगु

बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर

पतझाड़

धरम काँट

तिलासंक्रान्तिक लाइ

कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भौँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकैँ फुसलबै छी

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्रूताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

टूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी
सुभद्रा
देखल दिन : 1
पड़ाइन
चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी
भोलानाथ बाबा
घटक बाबा
इजोरिया राति
भँसैत नाह

शम्भुदास
शिवजीक डाक-बाक्
सजाए
छुटि गेल
कनफुसकी

फाँसी
गति-मुक्ति
बजन्ता-बुझन्ता
अप्पन हारि
कोसलिया

मुसहैन
बिसाँढ़
मत्हानि
तेरहो करम
बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख
गैत-वीध
बेवहारिक
ठका गेलौं
साए कच्छे

करिछौन लाली
बलजोर
गति-गुद्दा
कलम हानि कऽ
अकाल

भैंटक लावा
डंका
काल्हि दिन
इमानदार घूसखोर
सनेस : 1

बेर परहक भदवा

केलवाड़ी

हँसैत लहास

बलधकेल कटौज

कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत

सनेस

छोटका काका

कुकुरपन

हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी

देखल दिन : 2

मेकचो

कामिनी

संगी

ठकुआएल भुसवा

बपौती सम्पैत

दादी-माँ

कचहरिया भाय

एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। -**गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 50

